ORIGINAL RESEARCH PAPER

इतिहास

भारतीय धन की निकासी (ब्रिटेन की ओर)

KEY WORDS:

श्याम कुमार

विश्वविद्यालय - इंदिरा गांधी राष्ट्रीय ओपन यूनिवर्सिटी ,मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068

ब्रिटिश के आर्थिक हितों को पूर्ण रक्षा प्रदान करने वाला व्यापार उसके अनुकूल आयात-निर्यात व्यवस्था और ब्रिटेन के उद्योगों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भारत में कच्चे माल का उत्पादन और कृषि का व्यापारीकरण, रेल तथा यातायात के साधनों द्वारा ब्रिटेन की मशीनों द्वारा निर्मित वस्तुओं को संपूर्ण भारत और उसके गांव तक पहुंचाए जाने की व्यवस्था द्वारा व्यापार की प्रगति आदि ऐसे साधन थे ।जिनके माध्यम से भारत का धन बिटेन जाता था। परंतु इसके अतिरिक्त भी ऐसे साधन थे जिनके द्वारा भारत का धन बहुत बड़ी मात्रा में ब्रिटेन जाता था ।इन सभी साधनों द्वारा भारत का धन जिस प्रकार ब्रिटेन जाता था उस क्रिया को धान का निकास कहते हैं।

अवकाश प्राप्त ब्रिटिश सैनिक और असैनिक अधिकारी अधिकांशतः ब्रिटेन चले जाते थे।भारत सरकार इन्हें पेंशन प्रदान करती थी। सेवारत कर्मचारी भी अपने परिवारों और संबंधियों को यहां से धन भेजते थे। भारतीय नरेश द्वारा अंग्रेज अधिकारियों को भेंट स्वरूप प्रदान की गई वस्तु और धान की अधिकांश ब्रिटेन जाता था। ब्रिटिश नागरिकों द्वारा भारत की कृषि, उद्योग, यातायात आदि में लगाई गई पूंजी द्वारा प्राप्त हुआ लाभ भी ब्रिटेन जाता था। ईस्ट इंडिया कंपनी के विरोध में अनेक ऐसे विवरण प्राप्त होते हैं जिनसे यह स्पष्ट होता है कि कोलकाता के बंदरगाह से ही बहुत बड़ी मात्रा में हीरो ,मोती और विभिन्न बहुमूल्य पत्थरों का निर्यात किया गया था ।यह सभी धन ब्रिटिश नागरिकों ने भारत में रहते हुए प्राप्त किया था। जिसे वे स्वदेश भेजते थे 1758 - 65 ईसवी के मध्य के समय में ही ब्रिटिश नागरिकों ने लाभ की धनराशि भेजी थी। ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा अर्जित लाभ सम्मिलित ना था ब्रिटिश नागरिकों द्वारा अपने व्यक्तिगत साधनों द्वारा अर्जित किया गया था। कंपनी द्वारा अर्जित किया गया इस राशि से कई गुना अधिक होगा।

कंपनी ने अपने राज्य- विस्तार के लिए जो धन् खर्च किया। वह इतना अधिक था कि समय-समय पर उसने भी ब्रिटेन की सरकार से कर्ज लिया ।उस कर्ज को ब्याज सहित कंपनी ने ब्रिटेन की सरकार को लौटा आया। वह भी भारत से ही एकत्रित किया गया। 1857 ईसवी में यह कर्ज़ 6 करोड़ 90 लाख हो गया जो कंपनी को ब्रिटेन की सरकार को देना था।

दादाभाई नौरोजी के अनुसार भारत का धन भारत से बाहर जाता था और फिर वही धन भारत को कर्ज के रूप में दिया जाता था। जिसके लिए उसे अतिरिक्त धन उस कर्ज और उस कर्ज की ब्याज के चुकाने के लिए जुटाना पड़ता था। यह एक ऐसा दुष्चक्र था जिसे तोड़ना कठिन था।

इस धन के निकास के कारण भारत में रोजगार तथा आय की संभावनाओं पर अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। आर .सी .दत्त ने एक भारतीय कवि की इस उपमा का उल्लेख किया था। जिसमें राजा का अपनी जनता से अधिक कर ग्रहण करना सूरज की पृथ्वी से उस पानी के प्राप्त करने के समान होता था जो वह वर्षा के रूप में पुनः भूमि को देता था ।परंतु यहां तो सूरज पानी भारत से ग्रहण कर वर्षा केवल इंग्लैंड को ही देता है।

भारत के धन का ब्रिटेन जाने का एक साधन व्यापार में लगी हुई पूंजी से प्राप्त लाभ का ब्रिटेन भेजना था। जब से ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंगाल बिहार और उड़ीसा के सूबो पर अपने राजनीतिक सत्ता स्थापित की। तब से उसने भारत के व्यापार हेतु खरीदी जाने वाली वस्तुओं के लिए ब्रिटेन से धन लाना बंद कर दिया। प्लासी के युद्ध के पश्चात कंपनी ने बंगाल के नवाब से भेंट स्वरूप धन प्राप्त करना शुरू कर दिया ।उसी धन से भारत में उन वस्तुओं को खरीदना आरंभ किया गया। जिन्हें कंपनी निर्यात कर के व्यापारिक लाभ अर्जित करती थी। बाद में अपने ऊपर निर्भर करने वाले सभी राजाओं और नवाबों से कंपनी ने अपने सैनिक और राजनीतिक सहायता के बदले में पर्याप्त धन प्राप्त किया और उसे व्यापार में लगाया।

इस प्रकार कंपनी ने भारत के धन को व्यापार में लगाया और उसे ब्रिटेन से धन लाने की आवश्यकता न रही। बक्सर के युद्ध के पश्चात जब कंपनी ने बंगाल ,बिहार ,उड़ीसा की दीवानी प्राप्त कर ली ।तब उसकी आय भारत में और भी अधिक हो गई ।इन सूबो से लगान के रूप में प्राप्त की गई धनराशि को भी कंपनी ने व्यापार में लगाया ।लगान कंपनी के आय का प्रमुख साधन था ।कंपनी ने लगान की दर में निरंतर वृद्धि की ।जिसका असर भारतीय किसानों पर पड़ा ।कंपनी के आए का एक प्रमुख साधन भारत में नमक के व्यापार को उसका अधिकार था। कंपनी ने नमक के मूल्य में निरंतर वृद्धि की।

1835 ईस्वी में ही बाजार में नमक का मूल उसके उत्पादन मूल से 1200 से ₹2000 तक अधिक था। उसके मूल में इतनी अधिक वृद्धि भारतीय जनसाधारण के लिए अत्यधिक कष्ट पूर्ण थी। बीसवीं सदी में महात्मा गांधी ने इसी कारण अपने सविनय अवज्ञा आंदोलन का आरंभ नमक- कर को तोड़ने से ही किया था। इसमें भारत के आर्थिक साधनों से प्राप्त हुए धनराशि का उपयोग भारतीयों के लिए नहीं हुआ। दादा भाई नौरोजी के अनुसार 1894 से 95 ईसवी के मध्य भारत में प्रतिवर्ष ₹400000000 का सामान ब्रिटेन भेजा ।जिसके बदले में उसे एक पैसे का भी लाभ नहीं हुआ।

इस प्रकार भारत का धन प्रचुर मात्रा में ब्रिटेन जाता रहा ।जिसका गंभीर प्रभाव भारतीयों की आर्थिक स्थिति पर पड़ा। भारतीयों की असहनीय निर्धनता का एक बड़ा कारण भारतीय धन का निकास भी रहा।

संदर्भ सूची:-

1) B.H.Baden Powell :The Land of British India.
2) R.C.Dutt :Economic History of India.
3) Morris D.Morris :India Economic In Nineteenth century.
4) Eric Stokes : The Peasant and the Raj